अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2013) | दिनांक 19.12.2013

पांचवा वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

संजया – 25

प्र.1 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दें – 10

(क) पल्योपम किसे कहते हैं? (ख) ''षट्स्थान पतित'' का क्या तात्पर्य है, समझाएँ।

(ग) मध्यवर्ती 22 तीर्थंकरों के शासन में और महाविदेह क्षेत्र में कौन से चार कल्प अनिवार्य होते हैं?

(घ) सामायिक चारित्र में ज्ञान कितने व कौन–कौन से पाते हैं?

(ङ) छेदोपस्थापनीय चारित्र का अन्तर द्वार लिखें।

(च) परिहारविशुद्धि चारित्र को अप्रतिसेवी क्यों कहा गया है?

(छ) सूक्ष्म संपराय चारित्र की स्थिति उत्कृष्ट अंतर्मुहुर्त्त ही क्यों मानी गई है?

प्र.2 किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिये – 5

(क) आकर्ष किसे कहते हैं? इसमें किसका विवेचन किया गया है?

(ख) कम से कम कितनी अवस्था वाला साधु परिहार विशुद्धि चारित्र ग्रहण कर सकता है?

(ग) तीर्थी किसे कहते हैं?

(घ) सामायिक से सीधा सूक्ष्मसंपराय चारित्र कहाँ–कहाँ आता है?

(ड.) यथाख्यात चारित्र वाला अनाहारक किस–किस अपेक्षा से होता है?

(च) परिहार विशुद्धि चारित्र में लेश्या कितनी व क्यों मानी जाती है?

(छ) परिहार विशुद्धि चारित्र में पदवी कितनी व कौन–कौन सी पाती है?

प्र.3 कोई पांच द्वार लिखें – 10

(क) छेदोपस्थापनीय चारित्र – अन्तर द्वार (ख) सूक्ष्मसंपराय चारित्र – सन्निकर्ष द्वार

(ग) यथाख्यात चारित्र – प्रव्रज्या द्वार (घ) छेदोपस्थापनीय – कालद्वार

(ङ) सामायिक चारित्र – परिणाम द्वार (च) छेदोपस्थापनीय – गति, स्थिति, पदवी

(छ) यथाख्यात चारित्र – प्रज्ञापना द्वार।

नियंठा – 25

प्र.4 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखें – 5

(क) बकुश किसे कहते हैं? (ख) अछवी और असबली से आप क्या समझते हैं?

(ग) पुलाक के तीनों परिणाम किस अपेक्षा से कहे गए हैं?

(घ) बकुश निर्ग्रन्थ में समुद्घात कितने व कौन से पाते हैं?

(ड) कषाय कुशील की गति जघन्य व उत्कृष्ट किस देवलोक तक मानी गई है?

(च) प्रच्छन्न रूप से जो दोष लगाता है, वह कौन सा निर्ग्रन्थ कहलाता है?

(छ) केवली समुद्घात का कौन–कौन सा समय अनाहारक होता है?

प्र.5 कोई दस द्वार लिखें – 20

(क) पुलाक – प्रव्रज्या द्वार (ख) प्रतिसेवना – आकर्ष द्वार

(ग) कषायकुशील – उपसंपद्हान द्वार (घ) बकुश – सन्निकर्ष द्वार

(ङ) प्रतिसेवना – काल द्वार (च) कषाय कुशील – ज्ञान, अध्ययन द्वार

(छ) पुलाक – अन्तर द्वार (ज) कषाय कुशील – कर्म उदीरणा द्वार

(झ) स्नातक – परिणाम, स्थिति द्वार (ञ) बकुश – गति, स्थिति पदवी

(ट) पुलाक – वेद, कल्प, चारित्र, शरीर द्वार

(ठ) बकुश – कर्मबंद्ध, कर्म उदीरणा, भव, संज्ञा द्वार।

गीतिका – नियंठा दिग्दर्शन – 10

प्र.6 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त लिखें – 2

(क) प्रथम तीन निर्ग्रन्थों को किस–किस उपमा से समझाया गया है?

(ख) उत्तर गुणों के प्रतिसेवी कौन सा निर्ग्रन्थ होता है तथा उनकी संख्या कितनी होती है?

(ग) ज्ञातासूत्र में मिथ्यात्वी किसे माना गया है?

(घ) कषाय कुशील कौन से गुणस्थानों में होता है? उनमें, लेश्या शरीर व समुद्घात कितने पाते हैं?

प्र.7 कोई दो पद्य को अर्थ सहित पूरा करें – 8

(क) ''परम आसता.....तेल समोय''। (ख) ''सूत्र तणी.....देवै रोयं''।

(ग) ''हय रूप.....पंचमो जोय''। (घ) ''खेत धान.....उफणोय''।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान – 40

प्र.8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें –

(क) पच्चीस बोल के अजीव तत्त्व के भेद अथवा ग्यारहवाँ बोल लिखें। 2

(ख) पच्चीस बोल की चतुर्भंगी में से उन्नीसवाँ बोल अथवा निर्जरा की चतुर्भंगी लिखें। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा में से जीव तत्त्व के पाँच से ग्यारह भेद किसमें व कौन से पाते हैं? 3

अथवा

सातवें दण्डक से बारह दण्डक किसमें व कौन से पाते हैं?

(घ) तत्त्वचर्चा में से 'छः द्रव्यों में सावद्य निरवद्य' अथवा छह द्रव्य में 'चोर साहूकार' की चर्चा लिखें। 3

(ङ) आयुष्य कर्म बन्ध के हेतु लिखें अथवा अनुभाग बन्ध और प्रदेश बंध को समझाएँ। 4

(च) मोहनीय व अंतराय कर्म के क्षयोपशम से होने वाली अवस्थाएँ लिखें। 3

अथवा

दृष्टान्त द्वार के आधार पर पुण्य और पाप तत्त्व की व्याख्या करें।

(छ) प्रायश्चित सूत्र पूरा लिखें अथवा शक्र स्तुति प्रारम्भ से धम्म देसयाणं तक लिखें। 3

(ज) ज्ञानदान का दोहा अथवा ''साध नै श्रावक रतनां.....कानी रे।।'' वाला पद्य लिखें। 3

(झ) आहारक तथा अनाहारक के गुणस्थान, योग, वीर्य तथा दृष्टि लिखें। 4

अथवा

मिथ्यात्वी तथा सम्यक मिथ्या दृष्टि के योग, दृष्टि, दण्डक, जीव का भेद लिखें।

(ञ) उदय के तैंतीस बोलों में सावद्य कितने? निरवद्य कितने? 3

अथवा

शुभयोग अशुभयोग कितने भाव? कितनी आत्मा? छः में कौन? नौ में कौन?

(ट) लघुदण्डक के आधार पर संज्ञी असंज्ञी द्वार अथवा अज्ञान द्वार लिखें। 3

(ठ) पाँचों प्रकार के तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अवगाहना लिखें अथवा सूर्य, चन्द्र और ग्रहों की स्थिति लिखें। 3

(ढ़) श्रुत के समुच्चय रूप से चार प्रकार लिखें अथवा अवधि ज्ञान का विषय लिखें। 3